इज़राइल

संक्षिप्त तथ्य

StandWith**Us**

द्वारा प्रकाशित

क्षेत्रीय मानचित्र

आकार की दृष्टि से इज़राइल अरब जगत के 1/800 वें भाग के बराबर है।

तुर्की
लेबनान
सीरिया
साइप्रस
सागर
गोलन हाइट्स
इज़राइल
ईराक
ईरान *
गाज़ा
वेस्ट बैंक
जॉर्डन
कुवैत
स्वेज
नहर
सिनाई
बहरीन
अकाबा की खाड़ी
तिरान जलडमरूमध्य
मिस्र
सऊदी
अरब
फारस की
खाड़ी
क़तर
यूएई
लाल
सागर
ओमान
इरिट्रिया
अरब
सागर
सूडान
यमन
अरब लीग देश
गैर-अरब देश
जिबूती
*ईरान अरब देश नहीं है, लेकिन यह मुस्लिम धर्मतंत्र है जो आतंकवाद को प्रायोजित करता है।
सोमालिया
इथियोपिया
दक्षिणी
सूडान
कोमोरोस
यूगांडा
केन्या

सीरिया
लेबनान
गोलन हाइट्स
कीरियट शमोना
नहारिया
साफेड
हाइफा
तिबेरियास
नज़रेथ
इज़राइल
हैडेरा
जेनिन
नेतान्या
तल्कर्म
हर्ज़लिया
नबलूस
क़लक़िलयाह
वेस्ट बैंक
तेल अवीव
रिशॉन लेज़ियॉन
रमाल्लाह
जेरिको
असदॉद
यरुशलम
जॉर्डन
अशकेलॉन
बेथलेहम
गाज़ा
स्डेरॉट
हेबरॉन
गाज़ा पट्टी
खान यूनिस
बीरशेवा
डिमोना
मिस्र
सबसे संकरे स्थान पर इज़राइल की चौड़ाई 15 किलोमीटर है और इसकी लम्बाई 466 किलोमीटर है।
ईलात

इज़राइल का आकार

इज़राइल का राज्य क्षेत्र 20,769 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।

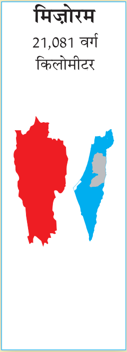

इज़राइल आकार में 21,081 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले मिज़ोरम से छोटा है। भारत के क्षेत्रफल में इज़राइल 158 बार समा सकता है।

यहूदी लोग लगातार इज़राइल की भूमि पर रहते आए हैं

पुरातात्विक और ऐतिहासिक साक्ष्यों और बाइबल में मिलने वाले उल्लेख के अनुसार यहूदी लोग इज़राइल के मूल निवासी हैं और 3,000 वर्षों से अधिक समय से वहाँ रहते आए हैं।

गाज़ा के प्राचीन यहूदी प्रार्थना भवन से प्राप्त छठी शताब्दी (बाइज़ैंटाइन काल) के पच्चीकारी के खण्ड में राजा डेविड को वीणा बजाते हुए दिखाया गया है।
– *इज़राइल संग्रहालय*

यहूदीवादः
एक राष्ट्र का पुनर्जन्म

सियोन यरुशलम और इज़राइल की भूमि का प्राचीन नाम है। सियोनवाद यहूदी लोगों, जो अपनी मातृभूमि में स्वतंत्रता और स्वाधीनता को पुन:स्थापित करना चाहते हैं, का राष्ट्रीय मुक्ति आन्दोलन है।

थियोडोर हर्ज़ल ने 1897 में आधुनिक सियोनवादी आन्दोलन की स्थापना की, लेकिन अपनी मातृभूमि की स्थापना करना और वहाँ वापस लौटना सदा ही यहूदी धर्म और यहूदी अस्मिता का केन्द्र बिन्दु रहा है। यही कारण है कि 19वीं शताब्दी में यहूदी लोग यरुशलम में अधिसंख्यक थे।[1]

[1] सर मार्टिन गिल्बर्ट, ''जेरुसलमः ए टेल ऑफ वन सिटी,'' *द न्यू रिपब्लिक,* 14 नवम्बर, 1994 www.mefacts.com/cache/html/wall-ruling_/11362.htm; डोरे गोल्ड, *द फाइट फॉर जेरुसलम,* पृ. 120

‘‘यह बात सुस्पष्टतया उचित है कि दुनिया भर में बिखरे हुए यहूदियों का एक राष्ट्रीय केन्द्र और एक गृह राष्ट्र होना चाहिए, और इसके लिए फिलिस्तीन, जिसके साथ 3000 वर्षों से अधिक समय से उनका घनिष्ठ और प्रगाढ़ सम्बंध रहा है, से बेहतर और कौन सा स्थान हो सकता है?’’

– *विंस्टन चर्चिल, 1920*

''फिलिस्तीन में यहूदियों के अधिकारों को कौन चुनौती दे सकता है ? कमाल है, ऐतिहासिक दृष्टि से यह आपका ही देश है।''

– यूसफ दिया अल–खालिदी,
यरुशलम के मेयर, 1899

माउंट ऑफ ऑलिव्स पर यहूदी लोग, 1893

धार्मिक बहुमत के आधार पर देशों की संख्या

67	रोमन कैथोलिक
49	इस्लामी
49	प्रोटेस्टेंट
14	ईस्टर्न ऑर्थोडॉक्स
3	हिन्दू
1	यहूदी

विश्व के धर्म

ईसाई धर्मः	2 बिलियन अनुयायी
इस्लामः	1.6 बिलियन अनुयायी
हिन्दू धर्मः	1 बिलियन अनुयायी
बौद्ध धर्मः	376 मिलियन अनुयायी
यहूदी धर्मः	14 मिलियन अनुयायी

“यूनान और रोम वासी... आए और चले गए; दूसरे लोग भी आए और कुछ समय तक उन्होंने अपनी मशाल ऊँची उठाए रखी लेकिन वह भी बुझ गई... यहूदियों ने इन सबको देखा, इन सबके बाद भी अपना वजूद कायम रखा... एक यहूदी को छोड़कर बाकी सभी नश्वर हैं; बाकी सभी शक्तियाँ मिट गईं, लेकिन वह कायम है। उसके अमरत्व का रहस्य क्या है?”

— *मार्क ट्वेन, 1898*

''इज़राइल के विदेश मंत्रालय के सन् 2009 में किए गए एक अध्ययन के अनुसार भारत दुनिया भर में इज़राइल का सबसे अधिक समर्थन करने वाला देश है।''

– इतामार ईचनर, ''फ्रॉम इंडिया विद लव'' वाई–नेट न्यूज़, 3 अप्रैल, 2009

http://www.ynetnews.com/articles/0,7340,L-3696887,00.html

''29 जनवरी, 2012 को भारत और इज़राइल ने पारस्परिक कूटनीतिक सम्बंधों की 20वीं वर्षगाँठ मनाई।

''इन युवा और सक्रिय सम्बंधों के पीछे यहूदियों और भारतीयों के बीच 2000 वर्षों से अधिक समय से चले आ रहे प्राचीन सम्बंधों की पृष्ठभूमि है। आज, इज़राइल और भारत मानवजाति के लगभग सभी उद्यमों में घनिष्ठ और विशिष्ट संबंधों में साझेदारी कर रहे हैं।''

– इज़राइली विदेश मंत्रालय,

http://mfa.gov.il/MFA/PressRoom/2012/Pages/Israel_India_20_years_diplomatic_relations_29-Jan-2012.aspx

फोटो क्रेडिट: **Reuters**

यहूदी गृह-राष्ट्र की पुनः स्थापना

18वीं शताब्दी के मध्य में इज़राइल, जिसे उस समय "फिलिस्तीन"* कहा जाता था, में रहने वाले यहूदियों में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। सर मोज़ेज़ मॉन्टे फियोरे जैसे मानवप्रेमियों की सहायता और दुनिया भर के साधारण यहूदियों द्वारा जमा किए गए चंदे की राशि से यहूदियों ने अपने-अपने शहरों से निकल कर ज़मीनें खरीदना और फार्म्स स्थापित करना, गाँव बसाना और स्कूल बनाना शुरू किया।

सन् 1854 तक यहूदी यरुशलम का सबसे बड़ा धार्मिक समुदाय बन गए; 1870 तक एक बार फिर वे शहर की जनसंख्या का बहुसंख्यक समूह बन गए।

* इस क्षेत्र को फिलिस्तीन नाम उस समय दिया गया जब रोम वासियों ने पहली शताब्दी में 1000 वर्ष पुराने जूडिया के यहूदी राष्ट्र को पराजित किया।

तेल अवीव

2009 में तेल अवीव ने
अपना शताब्दी वर्ष मनाया।

अरब देशों से आए यहूदी शरणार्थी

1948 में इज़राइल के पुनर्जन्म के बाद 850,000 से ज़्यादा यहूदी बढ़ते हुए उत्पीड़न से बचकर या अरब और मुस्लिम क्षेत्रों से निर्वासित कर दिये जाने के कारण इज़राइल पहुँचे। हालाँकि उनमें से कुछ के समुदाय 2000 साल से भी ज़्यादा पुराने थे फिर भी उन्हें बेघर होना पड़ा। लगभग 650,000 की जनसंख्या वाले नवनिर्मित इज़राइल देश ने फिर भी न केवल यहूदियों के विध्वंस से जीवित बचे लोगों को, बल्कि अरब देशों से जान बचाकर आने वाले यहूदियों को भी समाहित करना शुरू किया।

मध्य-पूर्व के देशों में यहूदियों की घटती जनसंख्या

	1948	2011
अल्जीरिया	140,000	1,500
मिस्त्र	75,000	100
ईरान	100,000	10,400
ईराक	150,000	7
लेबनान	20,000	0
लीबिया	38,000	0
मोरक्को	265,000	2,700
सीरिया	30,000	100
ट्यूनिशिया	105,000	1,000
यमन	55,000	250
कुल	**978,000**	**16,057**

1948 के युद्ध के परिणामस्वरूप, 850,000 से अधिक यहूदियों को अरब देशों को छोड़कर जाने के लिए विवश होना पड़ा जहाँ वे दो सहस्त्राब्दियों से अधिक समय से रह रहे थे।

स्रोत: सर्जियो डेलापेरगोला, *वर्ल्ड ज्यूइश पॉप्यूलेशन, 2010,* बर्मन इन्स्टीट्यूट नॉर्थ अमेरिकन ज्यूइश डाटा बैंक www.jewishdatabank.org/Reports/World_Jewish_Population_2010.pdf तथा ''फैक्ट शीट: ज्यूइश रेफ्यूजीज़ फ्रॉम अरब कंट्रीज़,'' *ज्यूइश वर्चुअल लाइब्रेरी,* सितम्बर 2012, देखें www.jewishvirtuallibrary.org/jsource/talking/jew refugees.html

1948 में इज़राइल के खिलाफ अरब युद्ध के फिलिस्तीनी-अरब शरणार्थी

1948 में, इज़राइल की सीमाओं में रहने वाले 160,000 अरबों ने शांति का चुनाव करके इज़राइली नागरिक बन जाने के इज़राइल के आमंत्रण को स्वीकार किया था। 472,000 से 750,000 फिलिस्तीनी अरब (इन आँकड़ों को ले कर विद्वानों के बीच मतभेद है) विभिन्न कारणों से उस क्षेत्र को छोड़कर चले गए जो आगे चलकर इज़राइल बना:

1. युद्ध से बचने के लिए।[1]
2. क्योंकि सम्पन्न अरब नेतागण चले गए थे, इसलिए नेतृत्व के अभाव में अरब समुदाय बिखर गए।[2]
3. क्योंकि अरब नेताओं ने जनसामान्य को आगे बढ़ती हुई अरब नेताओं के रास्ते से यह आश्वासन देते हुए हट जाने के लिए कहा कि जल्द ही उनकी जीत हो जाएगी और तब वे लोग शीघ्र ही अपने घरों को वापस लौट सकेंगे।[3]
4. कथित इज़राइली अत्याचारों की अफवाहों ने भय का वातावरण उत्पन्न कर दिया था।[4]
5. कुछ मामलों में, इज़राइली सैनिकों ने अरब बाशिन्दों को ऐसे संवेदनशील, सामरिक महत्त्व के क्षेत्रों से अपने घर छोड़ कर जाने के लिए विविश किया जो यहूदी राज्य के अस्तित्व की रक्षा की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे।[5]

[1–5] बेनी मॉरिस, *द बर्थ ऑफ द पैलेस्टीनियन रेफ्यूजी प्रॉब्लम: 1947–1949*

फिलिस्तीनी शरणार्थियों की विचित्र स्थिति

दुनिया के अन्य युद्ध प्रभावित क्षेत्रों के करोड़ों शरणार्थियों को, इस काल के दौरान, दूसरे देशों में पुनर्वासित किया गया है, लेकिन जॉर्डन को छोड़कर, शेष पड़ोसी अरब देश फिलिस्तीनी अरबों के साथ अपने साझा इतिहास, भाषा और धर्म के बावजूद उन्हें अपने यहाँ बसाने के लिए तैयार नहीं थे। इसके विपरीत, अरब सरकारों ने उन्हें शरणार्थी बस्तियों में बसाया, उन्हें नागरिकता देने से इन्कार किया और उनकी दुर्दशा को इज़राइल के खिलाफ दुष्प्रचार के हथियार के रूप में प्रयोग किया।

''अरब देश शरणार्थियों संबंधी समस्या को हल नहीं करना चाहते हैं। वे इसे एक खुले घाव की तरह रखना चाहते हैं, जिसका प्रयोग संयुक्त राष्ट्र संघ तथा इज़राइल के खिलाफ हथियार के रूप में किया जा सके।'' – रैल्फ गैलोवे, यू.एन.आर. डब्ल्यू. ए. के पूर्व निदेशक, अगस्त 1958

''1948 से अरब नेता... फिलिस्तीनी जनता का इस्तेमाल निजी राजनैतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए करते आए हैं। यह... आपराधिक है।'' – जॉर्डन के किंग हुसैन, 1960

''सभी अरब देश इस समस्या को किसी खुले घाव की तरह दिखने वाला रखना चाहते हैं।''– एना लिरिया–फ्रांच, काहिरा में शरणार्थियों के मामलों के संयुक्त राष्ट्र संघ की उच्चायुक्त, 2003

सुरक्षा बाड़

- दूसरे इन्तिफादा की हिंसा के पहले तक – जब फिलिस्तीनी समुदायों से आत्मघाती लड़ाके आसानी से इज़राइल में प्रवेश कर सकते थे – पश्चिमी तट पर कोई सुरक्षा बाड़ नहीं लगाई गई थी।

- सुरक्षा बाड़ का निर्माण 2002 में शुरू किया गया। इस सुरक्षा घेरे का 97 प्रतिशत भाग बाड़ के रूप में है और 3 प्रतिशत भाग दीवार के रूप में है।

- अमेरिका, तुर्की, उत्तरी आयरलैंड, द नीदरलैंड्स, भारत, स्पेन, थाइलैंड, फिनलैंड और यमन सहित दर्जनों ऐसे देश हैं जिन्होंने अपनी सीमाओं पर बाड़ और/या दीवार का निर्माण किया है।

शांति की शिक्षा

दुर्भाग्य से फिलिस्तीनी बच्चों को अभी भी मस्जिदों और स्कूलों में और टीवी पर घृणा और हिंसा का पाठ पढ़ाया जाता है, और अभी भी इज़राइल के खिलाफ जिहाद को बढ़ावा दिया जाता है।* मध्य पूर्व क्षेत्र में शांति की स्थापना करने के लिए शांति का ही पाठ सिखाया जाना चाहिए।

***www.pmw.org.il पर तथा www.memri.org पर फिलिस्तीनी मीडिया वॉच देखें।**

हमास का घोषणापत्र* हिंसा और नस्लभेद को बढ़ावा देने वाला है

''इज़राइल का अस्तित्व कायम रहेगा और तब तक कायम रहेगा जब तक कि इस्लाम उसे खत्म न कर दे, जैसा कि उसने इज़राइल के पूर्ववर्तियों के साथ किया।''

जब इज़राइल ने गाज़ा क्षेत्र को छोड़ा तो, हमास को वहाँ का नया शासक दल चुना गया। हमास की स्थापना के दस्तावेज़ में इज़राइल को नष्ट करने और यहूदियों की हत्या करने का आह्वान किया गया है। (आप इस घोषणा पत्र का अनुवाद ऑनलाइन पढ़ सकते हैं।)

जब तक यह दस्तावेज़ हमास या फिलिस्तीनी लोगों का मार्गदर्शी दस्तावेज़ बना रहेगा, तब तक शांति की स्थापना का सपना असम्भव ही बना रहेगा।

* हिज़्बुल्लाह और पी.एल.ओ. के घोषणापत्र भी हिंसक और नस्लभेदी प्रकृति के हैं।

इज़राइल की सुरक्षा के लिए खतरे

- ईरानी नेता इज़राइल को ''नक्शे से मिटा दिए जाने'' की बात कहते हैं और परमाणु हथियार बनाने की दौड़ में जुटे हैं।
- ईरान द्वारा समर्थित गुट हमास और हिज़्बुल्लाह अपने सैन्य हथियारों के भंडारों को बढ़ा रहे हैं और इज़राइल की दक्षिणी और उत्तरी सीमाओं पर खतरा बने हुए हैं।
- फिलिस्तीनी शासन पश्चिमी तट क्षेत्र में आतंकी संगठनों को खत्म करने या आतंकी योजनाओं या हथियारों की तस्करी को रोकने में या तो अक्षम या फिर अनिच्छुक रहा है।

इतिहास के पहले अरब फिलिस्तीनी राज्य की स्थापना

ऐतिहासिक दृष्टि से, पश्चिमी तट क्षेत्र, गाज़ा, या इज़राइल में किसी अरब फिलिस्तीनी राज्य या अरब फिलिस्तीनी सम्प्रभुता का अस्तित्व नहीं रहा है।

इज़राइल ने 1993 में ओस्लो समझौते के अन्तर्गत फिलिस्तीनियों के लिए पहली स्वशासन वाली सरकार, फिलिस्तीनी शासन (अथॉरिटी) की स्थापना की। आज फिलिस्तीनी शासन पश्चिमी तट क्षेत्र की 95 से 98 प्रतिशत फिलिस्तीनी आबादी पर शासन करता है।

यदि इज़राइल फिलिस्तीनियों के साथ शांतिपूर्ण वार्ताओं के माध्यम से पश्चिमी तट के कुछ हिस्सों या अधिकांश क्षेत्रों से अपना अधिकार छोड़ने के लिए सहमत हो जाता है तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह भूमि "वापस लौटाएगा" क्योंकि वहां कोई फिलिस्तीनी सम्प्रभु सरकार कभी भी अस्तित्व में नहीं रही है। इज़राइल, इतिहास में पहली बार, प्राचीन यहूदी मातृभूमि, जहाँ यहूदी लोग तीन सहस्राब्दियों से लगातार रहते आए हैं, के कुछ हिस्से देकर एक सम्प्रभु फिलिस्तीनी राष्ट्र की स्थापना में सहायता करेगा।

पश्चिमी तट क्षेत्र में रहने वाले फिलिस्तीनी समुदाय

95–98 प्रतिशत फिलिस्तीनी आबादी भूमि के 40 प्रतिशत भाग पर ही रहती है, जबकि 60 प्रतिशत भूमि वस्तुतः खाली पड़ी है।

पश्चिमी तट क्षेत्र में सबसे बड़ा फिलिस्तीनी शहर नबलूस चारों ओर से अविकसित भूमि से घिरा है।

पश्चिमी तट पर रहने वाले अधिकांश फिलिस्तीनी लोग नबलूस और तल्कर्म जैसे निर्मित शहरों और कस्बों में रहते हैं।

रमाल्लाह – जो फिलिस्तीनी शासन की राजनीतिक और आर्थिक गतिविधियों का केन्द्र है।

हरी रेखा (ग्रीन लाइन) से परे रहने वाले इज़राइली समुदाय

- इज़राइल द्वारा 1967 में जॉर्डन से पश्चिमी तट क्षेत्र और मिस्त्र से गाज़ा क्षेत्र पर कब्ज़ा किए जाने के बाद, अरब देशों ने शांति के एवज़ में कब्जे वाली भूमि को लौटाने के इज़राइल के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
- इज़राइल ने अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए इन क्षेत्रों में बस्तियाँ बसा दीं, और इज़राइली लोग पश्चिमी तट क्षेत्र की उन ज़मीनों पर जाकर पुनः बस गए जहाँ यहूदी लोग 1948 के युद्ध के बाद निर्वासित किए जाने तक कई सहस्त्राब्दियों से रहते आए थे।
- इज़राइली बस्तियों का निर्मित क्षेत्र पश्चिमी तट क्षेत्र की भूमि के1.7 प्रतिशत से कम है।[1]
- बसने वाले अस्सी प्रतिशत इज़राइली लोग हरी रेखा (ग्रीन लाइन) के नज़दीक या उससे सटे क्षेत्र में बसे हुए समुदायों में रहते हैं। शांतिपूर्ण वार्ता के माध्यम से सीमा रेखा में मामूली बदलाव करके इन लोगों को इज़राइल में शामिल किया जा सकता है और फिलिस्तीनी आबादी वाले केन्द्रों पर इसका प्रभाव नहीं पड़ेगा।

1 महमूद अब्बास, जून 2009 देखें www.memri.org/bin/latestnews.cgi?ID=SD244009; B'Tselem reports 1.7% www.btselem.org/english/press_releases/20020513.asp

इज़राइल में मानवाधिकार की स्थिति

- इज़राइल में सभी मतों की धार्मिक स्वतंत्रता की रक्षा की जाती है।

- समलैंगिकों को भेदभाव और द्वेषजन्य अपराधों से सुरक्षा प्रदान की जाती है।

- महिलाओं और पुरुषों की शिक्षा को समान रूप से प्रोत्साहन दिया जाता है।

- इज़राइल में पारिवारिक प्रतिष्ठा की रक्षा के नाम पर की जाने वाली हत्याओं के मामलों में दूसरे हत्या सम्बंधी अपराधों की भांति कड़ी सज़ा का प्रावधान है।

- कामकाजी जनशक्ति का 53 प्रतिशत महिलाएं हैं, यह प्रतिशत अमेरिका की कामकाजी महिलाओं के प्रतिशत के बराबर है।

- इज़राइल एक लोकतांत्रिक देश है जहाँ लोगों को वाक्स्वातंत्र्य और किसी स्थान पर एकत्र होने का अधिकार है और मुकदमों पर विचार करने की प्रक्रिया में खुलापन है।

इज़राइल में रह रहे अरबों की स्थिति

- 1948 में जो 160,000 फिलिस्तीनी अरब लोग इज़राइल की सीमाओं में रह गए उन्हें इज़राइल की नागरिकता प्रदान की गई।
- पहली नेसेट के लिए तीन इज़राइली अरब निर्वाचित हुए।
- आज 1.6 मिलियन अरब लोग इज़राइल के नागरिक हैं।
- अरबी और हिब्रू भाषाएं इज़राइल की दो राजभाषाएं हैं।
- अपने अल्पसंख्यक नागरिकों को पूर्ण सामाजिक और आर्थिक समानता हासिल करने में सहायता करने के लिए इज़राइल ने सकारात्मक कार्यनीतियाँ अधिनियमित की हैं।

इज़राइल द्वारा चलाए जा रहे मानवतावादी कार्यक्रम

- इज़राइल ने भूकंप की विभीषिका से क्षतिग्रस्त हैती में पहले उन्नत फील्ड अस्पताल की स्थापना की और तुर्की तथा ग्रीस में भूकंप पीड़ितों की सहायता की।
- इज़राइल द्वारा इथियोपिया में हवाई मार्ग से बचाव कार्य करके 28,000 अफ्रीकी यहूदियों को सुरक्षित स्थानों पर पहुँचाया गया।
- इज़राइल का सेव ए चाइल्ड्स हार्ट (SACH) दुनिया का ऐसा सबसे बड़ा कार्यक्रम है जो निर्धन देशों के ऐसे बच्चों की सहायता करता है जिन्हें हृदयरोग के उपचार के लिए शल्य चिकित्सा की आवश्यकता है।
- इज़राइल वियतनाम युद्ध के बाद ''नौकाओं में आने वाले शरणार्थियों'' को स्वीकार करने वाले गिने-चुने देशों में से एक था।
- इज़राइल उभरते हुए देशों के लिए हर साल लगभग 300 पाठ्यक्रमों का आयोजन करता है और अल्बानिया से लेकर जिम्बाब्वे तक 130 देशों में लगभग 200,000 प्रतिभागियों को मरु-कृषि, जल प्रबंधन, मरुस्थलीकरण की रोकथाम, आपात तथा आपदा चिकित्सा सेवा, शरणार्थियों के आत्मसात्करण, और रोज़गार कार्यक्रमों में प्रशिक्षित कर चुका है।

इज़राइल की नवीन पहलें – क्या आप जानते हैं?

- इज़राइल में प्रति व्यक्ति विश्वविद्यालयी डिग्रियों की दर कनाडा के बाद दुनिया में सबसे अधिक है।
- इज़राइल में शिक्षित वैज्ञानिकों और तकनीशियनों का अनुपात 135 प्रति 10,000 नागरिक है, जो कि सर्वाधिक है, जबकि अमेरिका में यह अनुपात 81 है।
- सिलिकॉन वैली के बाद, इज़राइल में हाइ–टेक कम्पनियों का घनत्व सबसे अधिक है।
- NASDAQ में सूचीबद्ध सबसे अधिक कम्पनियों वाले देशों की सूची में अमेरिका और चीन के बाद इज़राइल तीसरे स्थान पर है।

इज़राइली आविष्कारः

- विंडोज़ एन.टी. ऑपरेटिंग सिस्टम (माइक्रोसॉफ्ट–इज़राइल) का अधिकांश भाग
- ए.ओ.एल इंस्टेंट मेसेन्जर तथा चैट रूम प्रौद्योगिकियाँ
- पहला पीसी एन्टि वायरस सॉफ्टवेयर
- वॉयस मेल प्रौद्योगिकी
- इलैक्ट्रो–ऑप्टिक चिप्स तथा नैनो टैक्नॉलॉजी
- सेल फोन फीचर्स (मोटोरोला–इज़राइल)
- डैस्कटॉप कम्प्यूटर्स के लिए पेन्टियम 4 माइक्रोप्रोसेसर
- लैपटॉप कम्प्यूटर्स के लिए सेंट्रिनो माइक्रोप्रोसेसर
- समुदाय–निर्दिष्ट नेविगेशन सॉफ्टवेयर (वेज़)

Sponsored By: EVELYN & DR. SHMUEL KATZ

इस प्रकाशन को दुनिया भर में छात्रों और समुदायों के नेताओं तक पहुँचाने में हमारी सहायता करें

इन पुस्तिकाओं की और अधिक प्रतियाँ ऑर्डर करें:
shipping@standwithus.com

www.standwithus.com
पर हमारी अन्य सामग्री पढ़ें

शिक्षकगण! पाठ्यक्रम प्राप्त करें
www.learnisrael.org और
www.standwithus.com/TEACHINGTOOLS/
il101lp.asp के पते पर

कृपया StandWithUs की सहायता करें

उदारतापूर्वक सहायता राशि भेजें:
StandWithUs, PO Box 341069
Los Angeles, CA 90034-1069

info@standwithus.com • 310.836.6140

StandWithUs

स्टैंड विद अस (जिसे इज़राइल एमरजेंसी अलाइएंस के नाम से भी जाना जाता है) आन्तरिक राजस्व संहिता की धारा 501(c)(3) के अन्तर्गत कर से छूट प्राप्त एक संगठन है।

SWU626 03/2014